Vol.9 Dec.' 15-Jan.' 16 No.5-6
Annual Subscription : Rs 100
Rs. 10/- per copy

ब्रह्मार्पण
BRAHMARPAN

वेदोऽखिलो धर्ममूलम्

A Monthly publication of Brahmasha India Vedic Research Foundation

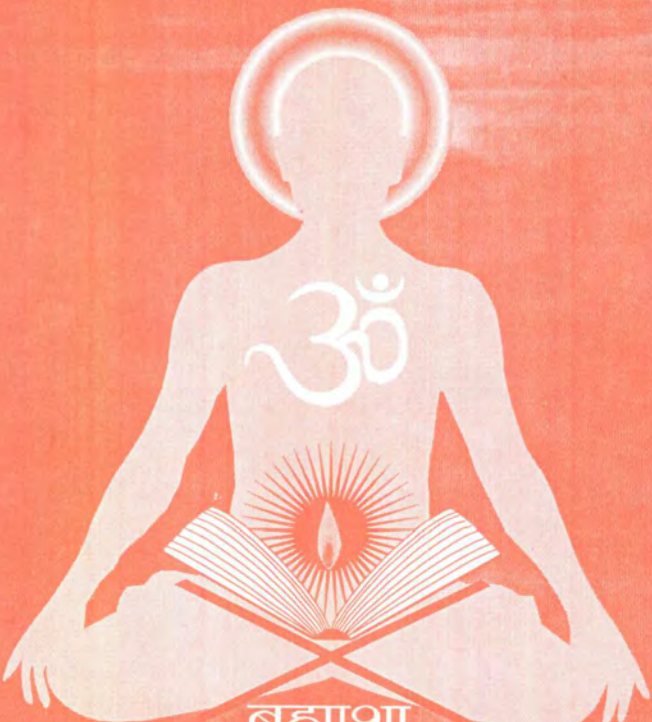

Brahmasha India Vedic Research Foundation
ब्रह्माशा इंडिया वैदिक रिसर्च फाउन्डेशन

विज्ञान और धर्म

–स्व. पण्डित हरिशंकर शर्मा

पं. नाथूराम शंकर शर्मा के सुपुत्र पं. हरिशंकर शर्मा का जन्म 19 अगस्त 1891 को हरदुआगंज, अलीगढ़, उ.प्र. में हुआ था। 9 मार्च 1968 तक आपने 'आर्यमित्र' का सम्पादन किया।

विज्ञान धर्म को धारण कर कल्याण विश्व का करता है

आविष्कारों की कथा, ज्ञान गरिमा का तत्व बढ़ाती है।
पाकर सुबुद्धि बल भौतिकता, उपकारमयी बन जाती है।
जल, थल, नभचारी यानों ने दूरी का भेद मिटाया है
गति तीव्र इन्द्रियों की करके मानव महत्त्व दरसाया है।।

जग को हितकारी होता है, सबके दुःख-संकट हरता है
विज्ञान धर्म को धारण कर कल्याण विश्व का करता है।।

रोगों का रौरव दूर किया भोगों के साज सजाए हैं
भौतिक जीवन के उपादान, यन्त्रादि लोक ने पाए हैं।
तन को सुख-साधन दान किए मनोरंजन के सामान दिए
लोहे लकड़ी जड़ द्रव्यों को प्रतिभा ने प्राण प्रदान किए।

सत सेवा में सलंग्न सदा, अघता अधर्म से डरता है
विज्ञान धर्म को धारण कर कल्याण विश्व का करता है।।

जब स्वार्थवाद का दुष्ट दैत्य निजता-परता फैलाता है
रच रच कर भीषण महायुद्ध, तब वज्र बाण बरसाता है।
विज्ञान नाश का कारण क्यों अज्ञान सर्व संहारक है
मानव दानव का दम्भ, दर्प, पशुता पाखण्ड प्रचारक है।

कुटिला कुनीति का क्रूर भाव विष विषम भावना भरता है
विज्ञान धर्म को धारण कर कल्याण विश्व का करता है।।

हो अपने को प्रतिकूल, न वह व्यवहार अन्य के साथ करो
धन, धाम, धरा, अधिकार, नारि, सुख-सुविधा औरों की न हरो।
तुम जियो जगत् में बन्धुभाव से, सब लोगों को जीने दो
विज्ञान धर्म के मधुर मिलन का प्रेमामृत नित पीने दो।

सद्भाव स्नेह, समता, ममतामय-पथ ही ठीक ठहरता है
विज्ञान धर्म को धारण कर कल्याण विश्व का करता है।।

BRAHMASHA INDIA VEDIC
RESEARCH FOUNDATION

C2A/58, Janakpuri,
New Delhi-110058
Tel :- 25525128, 9313749812
*email:*deeukhal@yahoo.co.uk
brahmasha@gmail.com
Website : www.thearyasamaj.org
of Delhi Arya Pratinidhi Sabha

Sh. B.D. Ukhul
Secretary
Dr. B.B. Vidyalankar 0124-4948597
President
Col.(Dr.) Dalmir Singh (Retd.)
V.President
Dr. Mahendra Gupta *V.President*
Ms. Deepti Malhotra
Treasurer

Editorial Board
Dr. Bharat Bhushan Vidyalankar,
Editor
Dr. Harish Chandra
Dr. Mahendra Gupta
Acharya Gyaneshwararya

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्याय क्षेत्र दिल्ली ही होगा।

Printed & Published by
B.D. Ukhul for Brahmasha India
Vedic Research Foundation
Under D.C.P.
License No. F2 (B-39) Press/
2007
R.N.I. Reg. No. DELBIL/2007/22062
Price : Rs. 10.00 per copy
Annual Subscription : Rs. 100.00

Brahmarpan Dec.' 15-Jan.' 16 Vol. 9 No.5-6
मार्गशीर्ष-पौष 2072 वि.संवत्

ब्रह्मार्पण
BRAHMARPAN

A bilingual Publication of Brahmasha India Vedic Research Foundation

CONTENTS

1. विज्ञान और धर्म 2
-स्व. पण्डित हरिशंकर शर्मा
2. संपादकीय 4
3. सांख्य दर्शन 7
-डॉ. भारत भूषण
4. वेदों के संबंध में भ्रान्त धारणाएँ 8
-भारत भूषण विद्यालंकार
5. महर्षि सुश्रुत 15
6. विद्या के सागर, महान् वक्ता, लेखक-आचार्य रामदेव 17
-भवानीलाल भारतीय
7. मूर्तिपूजा की निरस्सारता : एक हास्यकथा *16*
- भवानीलाल भारतीय
8. जनसंख्या : उतार-चढ़ाव के खतरे (विश्व जनसंख्या दिवस पर विशेष)
-दीनानाथ मिश्र *20*
9. आतंक का जन्मदाता इस्लाम 25
-स्वामी वेदमुनि परिव्राजक
10. हल्दी घाटी में महाराणा प्रताप की अकबर के विरुद्ध सामरिक व कूटनीतिक विजय 27
-हरिकृष्ण निगम
11. डॉ. राजेन्द्रप्रसाद स्वदेशी के प्रतीक 31
-कृष्ण मोहन गोयल
12. Soldier Saint Guru Govind Singh 32
-Pranav Khullar
13. मनुष्य की पहचान 35
-रेनू सैनी

संपादकीय

आओ, देश को असहिष्णुता के विषधर से मुक्त करें।

आज देश में चारों ओर असहिष्णुता की चर्चा है यहाँ तक कि संसद में भी इसी की चर्चा है। भारतीय संस्कृति का आधार सहिष्णुता है। विश्व में भारत सबसे सहिष्णु देश है। उसने कभी भी किसी दूसरे देश पर आक्रमण नहीं किया। प्रधानमंत्री मोदी हमेशा असहिष्णुता पर चर्चा के लिए तैयार रहते हैं। हमारा देश सहिष्णु था, सहिष्णु है और भविष्य में भी सहिष्णु रहेगा। विविधता में एकता हमारी संस्कृति की पहचान है। केन्द्र सरकार की 'कौमी एकता सप्ताह" मनाने की पहल सराहनीय है। इसके अंतर्गत 20 नवम्बर को 'अल्पसंख्यक कल्याण दिवस', 21 नवंबर को 'भाषाई सद्भाव दिवस', 22 को 'कमजोर वर्ग दिवस', 23 को 'सास्कृतिक एकता दिवस', 24 को 'संरक्षण दिवस', 25 को 'सांप्रदायिक सद्भाव ध्वज दिवस' के तौर पर मनाया गया। ऐसी स्थिति में जब देश में भारतीय जनता पार्टी विरोधी वर्गों द्वारा देश में व्याप्त असहिष्णुता पर बहस हो रही है और यह धारणा बन रही, है कि देश में साम्प्रदायिक सौहार्द सुरक्षित नहीं है। दिल्ली विधानसभा के शीतकालीन सत्र में देश में बढ़ती असहिष्णुता पर खुलकर बहस हुई। मामला भारतीय जनता पार्टी के विपक्ष के नेता विजेन्द्र गुप्ता ने उठाया। उसने असहिष्णुता के कुछ उदाहरण दिए। पहला उदाहरण देश के विभाजन का, दूसरा उदाहरण इंदिरा जी द्वारा इमरजेंसी लागू करने पर 1984 में बेगुनाहों की हत्या का, और तीसरा उदाहरण सदन में इस मामले पर चर्चा का है। जिसमें विरोधी पक्षों द्वारा असंयत भाषा का प्रयोग किया गया।

इस बीच दो घटनाएँ अल्पसंख्यक वर्ग के लोगों के साथ हो

गई जिनमें से एक घटना इखलाक़ द्वारा गोमांस खाने से संबंधित थी तो दूसरी घटना पलवल में हुई जिसमें अल्पसंख्यक वर्ग के सत्रह घर जला दिए गए। इनकी तीव्र प्रतिक्रिया हुई।

इससे पूर्व यह विवाद तब उठा जब कन्नड़ लेखक कलबुर्गी महाराष्ट्र के नरेन्द्र दाभोलकर और गोविंद पनसरे की हत्या कर दी गई। कुछ भारतीय जनता पार्टी के विरोधियों ने इसमें किसी सनातन हिन्दू संस्था के समीर गायकवाड़ का हाथ बताया और इसकी प्रतिक्रिया में देश में असहिष्णुता का आन्दोलन छिड़ गया। देश के भाजपा या हिन्दुत्व विरोधी पत्रकार, लेखक, इतिहासकार, कलाकार, अभिनेता उपर्युक्त हत्याओं के विरोध में अपने सम्मान, पुरस्कार, मेडल आदि लौटाने लगे। इस पर राष्ट्रपति व अन्य व्यक्तियों ने जो इस प्रतिक्रिया को उचित नहीं समझते थे इसे देश का अपमान कहा। इस संदर्भ में वरिष्ठ लेखिका कृष्णा सोबती ने ठीक ही कहा कि ये लोग, लेखक, साहित्यकार, कलाकार, अभिनेता आदि न होकर सत्ता के माफिया हैं जो दाभोलकर और इखलाक़ पर रोते हैं लेकिन कश्मीर में पंडितों से जो हुआ उस पर इनके हलक सूख जाते हैं।

सहिष्णुता के विवाद ने तब और तूल ले लिया जब बॉलिवुड अभिनेता आमिर खान और शाहरुख खान ने बढ़ती असहिष्णुता पर चिन्ता जताई। उन्होंने एक कार्यक्रम में कहा कि मुझे लगता है कि पिछले छह महीनों में लोगों में डर और असुरक्षा की भावना बढ़ी है। आमिर खान ने बताया कि ऐसे माहौल में एक बार मेरी पत्नी किरण ने मुझसे देश छोड़ने तक की बात कह दी। वह आसपास के माहौल से चिंतित थी।

आमिर खान के इस बयान की देश में तीव्र प्रतिक्रिया हुई। भारतीय जनता पार्टी के नेता शाहनवाज हुसैन ने कहा कि

आमिर डरे नहीं, डरा रहे हैं। भारत के मुस्लिमों को हिन्दुस्तान से अच्छा देश और हिन्दुओं से अच्छा पड़ोसी नहीं मिलेगा। भाजपा सांसद योगी आदित्यनाथ ने कहा कि यदि आमिर खान देश छोड़ना चाहते हैं तो उन्हें किसी ने रोका नहीं है। इधर बीजेपी ने मोर्चा खोला तो काँग्रेस ने आमिर का समर्थन किया। इस मुद्दे पर बॉलिवुड भी बँट गया। कुछ उनके साथियों ने उन्हें आड़े हाथों लिया। अनुपम खेर ने लिखा कि आमिर ने किरण को बताया कि इसी देश ने मुझे आमिर बनाया है। रामगोपाल वर्मा ने कहा कि 3-4 मुस्लिम हिन्दू प्रधान देश में सुपर स्टार बन सकते हैं तो असहिष्णुता कहाँ है? इसे उन्होंने पब्लिसिटी स्टंट कहा।

भारतीय जनता पार्टी के प्रवक्ता एम. जे. अकबर ने अभिनेता आमिर खान के असहिष्णुता विषयक टिप्पणी को नैतिक अपराध कहा और इसे देश को बदनाम करने की साजिश बताया। उसने आगे कहा कि मेरा विश्वास है कि किसी को भी किसी पार्टी से द्वेष के कारण देश का अपमान करने का अधिकार नहीं है। राष्ट्र को हमेशा राजनीति से ऊपर रखना चाहिए।

ऐसा प्रतीत होता है कि बाद में आमिर को सद्बुद्धि आ गई और उन्होंने कहा कि मैं एक बात साफ करना चाहता हूँ कि न तो मेरा और न ही मेरी पत्नी किरण का कभी देश छोड़ने का इरादा था और न कभी होगा। मैंने जो वक्तव्य दिया था उसे लोगों ने ठीक से समझा नहीं। वस्तुतः भारत मेरा देश है। मैं इससे बेइंतहा प्यार करता हूँ।

अन्त में केन्द्रीय मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने कहा कि एक अतिवादी ऐक्टर की प्रतिक्रिया से न केवल देश की छवि धूमिल हुई है बल्कि उनकी अपनी छवि को भी नुकसान हुआ है।

संपादक

सांख्य दर्शन (अध्याय-1, सूत्र-95-96)

-डॉ. भारत भूषण विद्यालंकार

महत् आदि के कार्य होने में सूत्रकार अन्य हेतु प्रस्तुत करता है-

परिमाणात् ।।95।।

अर्थ- (परिमाणात्) परिमाण होने से।

भावार्थ- परिमित (सीमित) होने से महत् आदि कार्य हैं यह सिद्ध होता है। जिस प्रकार सारा संसार घटमय नहीं है। घड़े की इयत्ता (सीमितता) को हम ग्रहण करते हैं, वह कार्य है, इसी तरह महत् का क्षेत्र सीमित है- विश्व में उसका अस्तित्व सब जगह नहीं पाया जाता, इसलिए परिमित होने के कारण उसे कार्य माना जाना चाहिए।

इसी संदर्भ में सूत्रकार अगले सूत्र में एक और हेतु प्रस्तुत करता है, सूत्र है-

समन्वयात् ।।96।।

अर्थ (समन्वयात्) समन्वय से।

भावार्थ-भिन्न पदार्थों का समान रूप होना समन्वय है यथा-व्यक्तिरूप हरेक घड़ा अलग है परन्तु मिट्टी के रूप में सबमें समानता है। इससे पता चलता है कि वे सब मिट्टी के विकार हैं इसी तरह कड़ा, कुण्डल आदि आभूषण भिन्न-भिन्न है परन्तु सुवर्ण रूप से सब से समानता है। इस समन्वय से कुंडल आदि सब सोने के विकार हैं, यह निश्चय होता है। अध्यवसाय स्वरूप बुद्धि अर्थात् महत् भिन्न व्यक्ति होने पर भी सुख, दुःख मोहरूपता सबमें समान पाई जाती है। इससे पता चलता है कि समस्त महत् सुख, दुःख, मोहरूप निर्गुण के विकार हैं। विकार होने से महत् आदि का कार्य होना निश्चित है।।96।।

हिबिस्कस बिल्डिंग-5, एपार्ट. 9बी,
सेक्टर-50, गुड़गाँव (हरियाणा)

वेदों के संबंध में भ्रान्त धारणाएँ

-भारत भूषण विद्यालंकार

आधुनिक युग में वैदिक साहित्य का अध्ययन अठारवीं शताब्दी से प्रारंभ हुआ। इसका आधार मध्यकालीन विद्वानों द्वारा कृत वेदों के भाष्य बने! इन भाष्यकारों में प्रमुख सर्वश्री शंकराचार्य, सायणाचार्य, उब्बट, महीधर आदि विद्वान् थे। इन विद्वानों ने अपने भाष्यों में ऐसी भयंकर अशुद्धियाँ कीं जो बाद में पाश्चात्य एवं भारतीय विद्वानों के भाष्यों में भी चली आई। इसके अतिरिक्त आधुनिक विद्वानों ने वेदों के मंत्रों के सही 'संदर्भ और संगति को न समझने के कारण तथा भारतीय सभ्यता, संस्कृति और संस्कृत भाषा को अपने धर्म ग्रन्थों और भाषा से निकृष्ट सिद्ध करने के लिए जानबूझकर वेदमंत्रों के गलत अर्थ किए। वेदों के कुछ प्रमुख पाश्चात्य भाष्यकार हैं- प्रो. मैक्समूलर, लुडविग, ओल्डेनवर्ग, सर विलियम जोन्स, रॉथ, विल्सन, ब्लूमफील्ड, ह्विटनी, कीथ, मोनियर विलियम्स, मैकडोनल, विन्टरनिट्ज, जैकोबी, ग्रिफिथ, रेव स्टीवन्सन, बॉप, श्लेगल आदि। इनमें से कुछ पाश्चात्य विद्वानों को छोड़कर शेष ने सायण, उब्बट, महीधर के भाष्यों का अंग्रेजी में अनुवाद किया। श्री बोडेन ने हमारे धर्मग्रन्थों को विकृत करने के लिए ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में संस्कृत एवं वेदों के अध्ययन के लिए 'बोडेन पीठ' की स्थापना की। इसका उद्देश्य एक ओर तो ईसाइयों के धर्म ग्रन्थों का संस्कृत में अनुवाद कराना था। दूसरी ओर वेदों के ऐसे भाष्य कराना था जिसे पढ़कर भारत के लोग वेदों से घृणा करने लगें और ईसाई धर्म को श्रेष्ठ समझने लगें। यह बात मोनियर विलियम्स द्वारा संकलित संस्कृत-इंग्लिश डिक्शनरी की भूमिका के निम्नलिखित उद्धरण से स्पष्ट होती है:-

"The special object of his (Boden's) munificent bequest was to promote the translation of the scriptures into Sanskrit, so as to enable his countrymen to proceed in the 'conversion of the natives of India to the Christian religion."

(अर्थात् श्री बोडेन के उदारदान का मुख्य प्रयोजन ईसाइयों के धर्मग्रन्थों का संस्कृत में अनुवाद कराना था ताकि उसके

देशवासी, भारतीयों को ईसाइयत की दीक्षा देने के कार्य में अर्थात् धर्मान्तरित करने में संलग्न हो सकें।)

आगे यह भी कहा है कि जिस दिन ब्राह्मण वैदिक धर्म के किले की दीवारें क्रॉस के सैनिकों (ईसाई पादरियों) द्वारा ध्वस्त हो जाएँगी, वह ईसाइयत की पूर्ण और अपूर्व विजय का दिन होगा। इसी संदर्भ में सन् 1868 में अपनी पत्नी को एक पत्र में प्रो. मैक्समूलर ने लिखा–

"I hope I shall finish my work and I feel convinced though I shall not live to see it, yet this addition of mine (of the Rigveda) and the translation of the Vedas will here after tell to a great extent on the fate of India and on the growth of millions of souls in that country. It is the root of their religion and to show them what the root is, is I feel sure 'the only way of uprooting all that has sprung from it during he last three hundred years."

प्रो. मैक्समूलर ने भारत के सचिव ड्यूक ऑफ आर्गाइल को एक पत्र में लिखा 'भारत का प्राचीन धर्म अब नष्टप्राय है। अब यदि ईसाइयत उसका स्थान नहीं लेती तो इसमें किसका दोष होगा ?"

इसी विषय में श्री पुसे ने प्रो. मैक्समूलर को लिखा–

"आपका कार्य भारतीयों को ईसाई बनाने के प्रयास में नया युग लाने वाला होगा और ऑक्सफोर्ड के लिए यह स्वयं को धन्य समझने का अवसर होगा कि उसके प्रश्रय में आपने भारत को ईसाई बनाने का काम आसान कर दिया।"

ऐसा ही एक पत्र 1899 में प्रो. मैक्समूलर ने ब्रह्मसमाज के एक सदस्य एन. के. मजूमदार को भी लिखा था जिसमें कहा था कि "यदि आपको या आपके देशवासियों को ईसा मसीह की शरण में आने में कोई संकोच हो तो उसके विषय में मुझे बताइए। मेरे मत में भारत का अधिकांश उच्च वर्ग पहले ही ईसाइयत में धर्मांतरित हो चुका है। आपको ईसाइयत में आने के लिए किसी प्रेरणा की आवश्यकता नहीं। बस आप हिम्मत से आगे बढ़िए।"

अतः स्पष्ट है कि प्रो. मैक्समूलर का वेदों के अनुवाद का

उद्देश्य वैदिक धर्म को नीचा दिखाकर ईसाइयत की श्रेष्ठता प्रतिपादित करना था। इस कार्य को कदापि निष्पक्ष नहीं कहा जा सकता। इसी पक्षपातपूर्ण मानसिकता के कारण प्रायः अधिकांश पाश्चात्य विद्वानों ने वेदों के अर्थ का ऐसा अनर्थ किया जिसे देखकर अत्यधिक आश्चर्य एवं दुःख होता है।

प्रो. मैक्समूलर ने इस कार्य के लिए कलकत्ता के व्याकरणचार्य पंडित तारानाथ को लालच देकर खरीद लिया। पं. तारानाथ को संस्कृत का ऐसा कोश तैयार करने के लिए कहा गया जो मैक्समूलर के वेदों के अनुवाद के अर्थों से मेल खाता हो। पं. तारानाथ ने अपने स्वाभिमान और विद्वत्ता को ताक पर रखकर दस हजार रुपयों में अपने को बेच दिया और छह खंडों में 'वाचस्पत्यम्' नामक विशाल शब्दकोश तैयार किया।

भारत के इतिहास को विकृत करने, हिन्दुओं के धर्म को नष्ट करने तथा संस्कृत भाषा को अपने उच्च प्रतिष्ठित स्थान से गिराने के उद्देश्य से सन् 1784 में लार्ड वारेन हेस्टिंग्स ने एशियाटिक सोसायटी की स्थापना की। इसके अध्यक्ष श्री जोन्स और इनके सहयोगी श्री विल्सन थे। इस दिशा में पहला निबन्ध जोन्स ने वाल्मीकि रामायण को विकृत करने के लिए लिखा, जिसके अनुसार 'राम' कुश के पुत्र थे। और उन्होंने इसमें श्री राम के चित्रों को मुस्लिम शासकों के समान दिखाने का प्रयास किया जिनके हाथ में धनुष के बजाय तलवार थी। इसमें को ग्रीक तथा प्राचीन रोमन धर्मों से बताकर ईसाइयत का वर्चस्व प्रतिपादित करने का प्रयास किया गया। यह भी कहा गया कि इस देश के मूल निवासी आर्य नहीं थे, वे बाहर से आए थे। इसलिए सभी धर्मों के लोगों को यहाँ रहने का उतना ही अधिकार है जितना हिन्दुओं को। यह भी बताने का प्रयास किया गया कि संस्कृत भाषा श्रेष्ठ नहीं है। वह ग्रीक और अंग्रेजी आदि के समान ही एक भाषा है। इसी संदर्भ में प्रो. मैक्समूलर को ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा वेदों के निकृष्ट कोटि के भाष्य करने के लिए नियुक्त किया गया। इन भाष्यों के पीछे क्या उद्देश्य था यह ऊपर बताया जा चुका है।

सन् 1786 में भारतीयता के समर्थक विलियम जोन्स ने अपने

एक भाषण में वैदिक काल की सभ्यता और संस्कृत भाषा की श्रेष्ठता का वर्णन करते हुए कहा था कि-

क. संस्कृत भाषा का गठन अद्‌भुत है।

ख. संस्कृत ग्रीक से निर्दोष और लेटिन से अधिक सक्षम है।

ग. संस्कृत भाषा इन दोनों भाषाओं से अधिक परिमार्जित है।

घ. क्योंकि भाषा समाज के विकास का प्रतिबिंब होती है, इससे पता चलता है कि वैदिक काल की सभ्यता विकसित थी। लार्ड मैकॉले को विलियम जोन्स के ये विचार पसन्द नहीं आए। उसने मैक्समूलर के माध्यम से उसे प्रताड़ित कराने का निश्चय किया। इससे पूर्व ईस्ट इण्डिया कंपनी को 1757 में प्लासी की लड़ाई में मिली विजय से उत्साहित मैकॉले के भारत पर ब्रिटिश शासन को सुदृढ़ करने के इरादों को बल मिला। मैकाले ने देखा कि युद्ध में पराजित होने के बावजूद भारतीय स्वयं को सांस्कृतिक दृष्टि से अब भी अंग्रेजों से उत्कृष्ट समझते हैं। उन्हें इस बात का अभिमान है कि पृथ्वी के विभिन्न देशों के लोग भारत की इस धरती पर उत्पन्न लोगों से ही ज्ञान-विज्ञान की बातें सीखते हैं। यह बात मनुस्मृति के इस श्लोक से स्पष्ट होती है, देखिए-

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः। स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्व मानवाः। (मनु)

एक अन्य अवसर पर फ्रेंच विद्वान् बॉप और जर्मन विद्वान् श्लेगल के संस्कृत को मूल भाषा और अन्य लेटिन, ग्रीक आदि को संस्कृत के बाद की भाषा कहने पर उन्हें मैक्समूलर के विरोध का सामना करना पड़ा था। इसी योजना के अंतर्गत भारत के संस्कृत विद्वानों को उच्च पदों का लोभ देकर और उन्हें ऑक्सफोर्ड और कैंब्रिज में प्रशिक्षित कर विश्व विद्यालयों में प्रोफेसर नियुक्त कर दिया गया ताकि वे भारतीयों को ईसाइयत में धर्मान्तरित करने के साधन बन सकें।

इन्हीं मैकॉले के मानसपुत्रों और पाश्चात्य विद्वानों का अनुसरण करने वाले भारत के विद्वानों ने भारतीय इतिहास और वैदिक ग्रन्थों को विकृत करना शुरु कर दिया। यह कार्य कांग्रेसी शासनकाल से हिन्दी विरोधी तथाकथित सैक्यूलरवादी एवं कम्यूनिस्ट इतिहासकारों ने भी जारी रखा, जिन्हें मौलाना

आज़ाद, नूरुल हसन, हुमायूँ कबीर, अर्जुन सिंह आदि कांग्रेसी शिक्षामंत्रियों का प्रश्रय प्राप्त हुआ। इन लेखकों ने आज़ादी के बाद से मुगल शासन को महिमा मंडित कर स्वर्णयुग का नाम दिया और इससे पूर्ववर्ती हिन्दू शासन काल को अंधकार युग कहा। इन्होंने हमारे पूर्वजों के इतिहास को विकृत करने के लिए यह प्रचार किया कि आर्यों ने भारत में आक्रान्ता बनकर प्रवेश किया। यहाँ के मूल निवासी जनजातियों के लोग व द्रविड़ थे। आर्य लोग 2500 ई. पूर्व–1500ई. पूर्व के बीच भारत में आए। उन्होंने यहाँ के आदिवासियों को पराजित कर देश पर अधिकार कर लिया।

क्या भारतीय आर्य अथवा हिन्दू विदेशी हैं? आज भारत में बसे हुए मुसलमान और ईसाई मतावलम्बी यह कहने का साहस करने लगे हैं कि "वे अनुसूचित, जनजातीय व दलित लोगों से धर्मान्तरित हुए हैं जो भारत के मूल निवासी थे। आर्य लोग आक्रमण करके बाद में यहाँ आए थे, इसलिए यदि इस देश से किसी को जाना होगा तो पहले आर्य हिन्दुओं को जाना होगा जो विदेशी हैं। इस देश के वास्तविक मालिक तो वे ही हैं।" यह उद्धरण 27 मार्च 1985 को प्रकाशित 'मुस्लिम इंडिया' से है। इसी संदर्भ में 4 सितम्बर 1997 को राष्ट्रपति द्वारा राज्य सभा के लिए मनोनीत क्रिश्चियन सदस्य श्री फ्रैंक एन्थोनी का वक्तव्य ध्यान देने योग्य है। उन्होंने संसद में यह माँग की संस्कृत भाषा को संविधान की अष्टम अनुसूची से निकाल दिया जाए क्योंकि यह विदेशी आक्रान्ता आर्यों की भाषा है।

पाश्चात्य विद्वानों द्वारा वेदों के अर्थों का अनर्थ

पाश्चात्य विद्वानों और उनके अनुगामी भारतीय विद्वानों ने प्रायः सायणाचार्य, उब्बट, महीधर आदि के भाष्यों का अनुसरण किया। इसलिए उन्होंने वेदों के अर्थों का अनर्थ कर दिया। इनके अनुसार वेदों में केवल यज्ञों और कर्मकाण्डों का विधान है। एक बात पर ध्यान देना आवश्यक है कि पाश्चात्य विद्वानों का दृष्टिकोण विकासवादी रहा है जो उनके लिए हर विषय की आधारभूत कसौटी है। इसलिए पहले उन्होंने वेदों में बहुदेवतावाद या अनेकेश्वरवाद को सिद्ध करने का प्रयास किया और बाद में जब मैक्समूलर का ध्यान वेदों में

एकेश्वरवाद की ओर दिलाया गया तो उसने उसे हीनोथीइज्म का नया नाम दे डाला। जिसमें प्रत्येक देवता में एक समान गुणों और प्रकार्यों का समावेश कर दिया गया। वस्तुतः अनेक देवताओं का स्थान-स्थान पर निर्देश होने पर भी सब देवों के अधिष्ठाता के रूप में एक ईश्वर की ही पूजा का विधान वेदों में पाया जाता है। इसी को ऋग्वेद 1.164.46 में कहा है-

एक सद्विप्रा बहुधा वदत्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः।

इस मंत्र में स्पष्ट कहा गया है कि एक ही सत्स्वरूप ईश्वर को बुद्धिमान् लोग अनेक नामों से पुकारते हैं। उसी को वे अग्नि, यम, मातरिश्वा आदि नामों से स्मरण करते हैं।

ऐसे उदात्त और एकेश्वर पोषक विचारों को पढ़कर उन्होंने इसे प्रक्षिप्त कहना शुरू कर दिया। परन्तु इसे भी वे सिद्ध नहीं कर सके क्योंकि उनके ही मतानुसार ऋग्वेद के पहले आठ मण्डल पुराने हैं और अंतिम दो मंडल बाद के हैं। जबकि यह मंत्र पहले ही मंडल का है। उनकी यह धारणा थी ऐसी प्रगतिशील बात वेदों में नहीं पाई जा सकती। इसी समय के आसपास सन् 1870 में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका की रचना की जिसमें यास्क के निरुक्त एवं निघंटु के आधार पर वेदार्थ जानने कुंजी प्रदान की जिसकी योगीराज अरविन्द ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। अब पाश्चात्य विद्वानों ने भी वेदार्थ के स्वरूप को समझना शुरू किया।

कुछ पाश्चात्य विद्वानों को छोड़कर शेष सभी ने भारत को अपनी अस्मिता, प्राचीन ज्ञान-विज्ञान, वैदिक साहित्य एवं अन्य विषयों में पिछड़ा हुआ दिखाने का प्रयास किया। मैकडानल ने संस्कृत साहित्य के इतिहास (1899) में लिखा है कि-

क. आर्यों में इतिहास, ज्ञान एवं लेखन कौशल का अभाव था।

ख. आर्य बाहर से आकर तेजी से पूरे भारत में फैल गए।

ग. भारतीय लोग सदा से ही विदेशियों से हारते रहे हैं।

घ. इसी संदर्भ में प्रो. मैक्समूलर ने भी लिखा है कि भारतीय अनपढ़ थे, उन्हें लिखना नहीं आता था। पाणिनि काल तक न तो उनकी कोई लिपि थी न उन्हें लेखन का ज्ञान था। यहाँ यह उल्लेख कर देना आवश्यक है कि-

क. भारतीय इतिहास-लेखन से परिचित थे। प्राचीनकाल में इतिहास के लिए इतिहास और पुराण शब्दों का प्रयोग होता था। अथर्ववेद में **"इतिहासश्च पुराणश्च गाथाश्च"** का उल्लेख है। यास्क ने निरुक्त के पूर्ववर्ती इतिहासकारों का मत उद्धृत करते हुए लिखा है- **"इत्यैतिहासिकाः"** अर्थात् ऐसा इतिहासविदों का मत है।

ख. कौटिल्य के काल में राजा के लिए प्रतिदिन इतिहास का अध्ययन और श्रवण आवश्यक था।

ग. पार्जिटर ने पुराणों से ही आर्यों के कालक्रम का अन्वेषण किया।

घ. प्रो. भंडारकर ने उन इतिहासकारों की भर्त्सना की जो कहते हैं कि भारतीयों को इतिहास लेखन की समझ नहीं थी।

ड. शतपथ ब्राह्मण और काठक संहिता (18/3/7) में वाणी को लिपिबद्ध करने का उल्लेख है- जो नीचे दिए उद्धरण से स्पष्ट है-

यज्ञमुखे वै यज्ञंरक्षांसि जिघासन्ति यत् परिलिखति।
रक्षसां अपहत्यै तिसृभिः परिलिखति।।

च. वेदों को लिखने के लिए ब्राह्मी लिपि का प्रयोग होता था। ब्रह्म अर्थात् वेदमंत्रों को लिपिबद्ध करने वाली लिपि को ब्राह्मी लिपि कहा गया।

छ. आर्य यदि इस देश में बाहर से आए थे तो वे एकदम सारे भारत में कैसे फैल गए? उन्हें यहाँ के लोगों की भाषा और रीति रिवाजों में ढलने में कुछ समय तो लगा ही होगा।

ज. आर्य लोग यदि यहाँ के लोगों को पराजित करके यहाँ आए तो यह कैसे कहा जा सकता है कि वे हमेशा पराजित होते रहे हैं। इन सभी बातों का कोई तर्क संगत आधार नहीं है।

हिबिस्कस बिल्डिंग-5, एपार्ट. 9बी,
सेक्टर-50, गुड़गाँव (हरियाणा)

महर्षि सुश्रुत

शल्यक्रिया के क्षेत्र में सबसे आगे सुश्रुत का नाम है। आप एक प्रसिद्ध व कुशल शल्य चिकित्सक थे। शल्य का शाब्दिक अर्थ है शरीर की पीड़ा। इस पीड़ा या दर्द का निवारण करना ही शल्य चिकित्सा कही जाती है। आंग्ल भाषा में उसे 'सर्जरी' अथवा 'ऑपरेशन' भी कहते हैं। सामान्यतः यह भ्रम है कि शल्यक्रिया का प्रारम्भ यूरोप में हुआ था। भारत देश में तो यह प्राचीन काल से अत्यन्त विकसित रूप से विद्यमान रही है। शल्यक्रिया का ज्ञान वैसे तो पुरातन काल से मानव को था। परन्तु वह विकसित अवस्था में न होने के कारण अत्यन्त पीड़ादायक प्रक्रिया के रूप में प्रचलित था। उसमें मृत्यु होने की सम्भावना भी अधिक मात्रा में थी। सुश्रुत ही ऐसे प्रथम चिकित्सक थे जिन्होंने शल्यक्रिया को एक व्यवस्थित स्वरूप दिया। आपने इस विधा का परिष्कार करके अनेकों मनुष्यों को स्वास्थ्यलाभ देने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

सुश्रुत महान् ऋषि विश्वामित्र के वंशज थे। ऋषि विश्वामित्र भी एक वैज्ञानिक थे। आपने एक नई ही सृष्टि की रचना कर दी थी। सुश्रुत द्वारा रचित प्रसिद्ध ग्रन्थ 'सुश्रुत संहिता' के लिए कहा जाता है कि इस ग्रन्थ में स्वर्ग के देवताओं द्वारा पूजे जाने वाले वैद्यराज 'धन्वन्तरी' के उन उपदेशों का संग्रह है जो उन्होंने सुश्रुत को दिए थे। शल्यचिकित्सा के क्षेत्र में सुश्रुतसंहिता को आज भी प्रमाण भूत माना जाता है।

'प्लास्टिक सर्जरी' को आजकल चिकित्सा विज्ञान की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि माना जाता है। अमेरिका के वैज्ञानिक इसका श्रेय लेते हैं। परन्तु सुश्रुत ने अपने इस ग्रन्थ से प्लास्टिक सर्जरी का उल्लेख सैकड़ों वर्षों पूर्व ही कर दिया था। इस पद्धति में नाक, कान, ओठ, अथवा चेहरे की सुन्दरता बढ़ाने के लिए उस-उस स्थान के मांस की जगह शरीर के ही किसी भाग का मांस लगाकर उसे सुन्दर रूप दिया जाता है। इस पद्धति का आधार लेकर ही प्राचीन काल के लोग अपना रूप बदल लेते थे। सुश्रुत की इस पद्धति का अनुसरण यूरोप ने किया। आज विश्वभर में यह पद्धति प्रचलित है। सुश्रुत संहिता का समय ईसा पूर्व 600 वर्ष का माना जाता है।

यह ग्रन्थ मूल संस्कृत भाषा में लिख गया था। ईसा की प्रथम शताब्दि अर्थात् वि.सं. 57 के आसपास सुप्रसिद्ध रसायनवेत्ता नागार्जुन ने उसे पुनः सम्पादित कर नया ही स्वरूप दिया था। महर्षि सुश्रुत अपने विद्यार्थियों को प्रयोग तथा क्रियाविधि से पढ़ाते थे। आप चीरफाड़ का प्रारंम्भिक अभ्यास शाकभाजी और फलों पर कराते थे। इस अभ्यास के पूर्ण हो जाने पर मृत शरीरों (शवों) पर अभ्यास कराया जाता था। वे स्वयं शवों पर ऑपरेशन कर दिखाते तथा वहीं विद्यार्थियों से भी अभ्यास कराते थे। आपने शल्यचिकित्सा के लिए एक सौ से भी अधिक यन्त्रों एवं औजारों का आविष्कार किया।

सुश्रुत संहिता में भिन्न-भिन्न प्रकार की वनस्पतियों का भी विश्लेषण करके उनका विस्तार से वर्णन किया है। महर्षि सुश्रुत का मानना है कि चिकित्सक को सैद्धान्तिक और किताबी ज्ञान के स्थान पर प्रयोगात्मक ज्ञान में कुशल होना चाहिए।

मूर्तिपूजा की निरस्सारता : एक हास्यकथा

–डॉ. भवानीलाल भारतीय

राजस्थान के एक ग्राम की बात है। अग्रवाल वैश्य पुत्रहीन था। उसे किसी ने कहा, भैरवजी को भैंसा भेंट करो अर्थात् उसकी बलि दो। भैरव प्रसन्न होकर तुम्हें पुत्र देंगे। सौभाग्य से उसे पुत्र प्राप्ति हो गई। अब भैरव को उसकी भेंट (भैंसे की बलि) कैसे दे अहिंसक वैश्य। उसने एक तरकीब सोची। एक भैंसा खरीदा और मोटे रस्से से बाँधकर भैरव मूर्ति के पास लाया। उसे भैरव की प्रस्तर मूर्ति से बाँधा तथा बोला– "भैरव बाबा, मैं तो अहिंसक बनिया हूँ, आपकी बलि प्रस्तुत है, यथा इच्छा इसका उपयोग करें।" वह तो चला गया और भैंसे ने अपने बँधन को हटाने के लिए जोर लगाया तो रस्से से बँधी मूर्ति उखड़ गई। भैंसा उसे लिए लिए भागा। आगे आगे भैंसा, पीछे रस्से से बँधे भैरव। गाँव के सीमान्त पर ग्राम देवी अपने मठ में बैठी थी, उसने यह दृश्य देखा तो बोली "अरे भैरव यह क्या हाल है? भैंसा तुझे खींचे लिए जा रहा है।" भैरव क्षुब्ध होकर बोले– "मठ में बैठी मटका करे (आँखें मटकाती है)। अग्रवाल को बेटा देती तो तेरा भी यही हाल होता।

315, शंकर कालोनी श्रीगंगानगर

विद्या के सागर, महान् वक्ता, लेखक–आचार्य रामदेव

–डॉ. भवानीलाल भारतीय

आर्यसमाज के बौद्धिक विद्वानों में शिखरमणि–तुल्य, प्रखर वक्ता और शिक्षा–शास्त्री आचार्य रामदेव का जन्म 1889 ई. में होशियारपुर जिले के बजवाड़ा ग्राम में, लाला चंदूलाल के यहाँ हुआ था। उनके पिता अध्यापक थे, अतः पुत्र की शिक्षा–व्यवस्था वे सुचारु रूप से कर सके।

15 वर्ष की आयु में मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् रामदेव जी ने डी. ए. वी. कॉलेज लाहौर में प्रवेश लिया। उन दिनों आर्यसमाज का संगठन कॉलेज दल तथा गुरुकुल–दल में विभक्त हो चुका था। रामदेव जी की सहानुभति गुरुकुल–दल की ओर थी, इसलिए वे कॉलेज की पढ़ाई को बीच में ही छोड़कर लाला मुन्शीराम के सहयोगी बन गए। उन्हें आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अंग्रेजी मुखपत्र 'आर्य पत्रिका' का उप–सम्पादक बना दिया गया। कुछ समय बाद वे जालंधर छावनी के विक्टर हाई स्कूल के मुख्याध्यापक बन गए। 1904 में उन्होंने बी. ए. पास किया। 1905 में बी.टी. करने के पश्चात् जींद राज्य में उन्हें स्कूलों के निरीक्षक का पद मिला गया। किन्तु रामदेव जी तो आर्यसमाज की सेवा के लिए ही उत्सुक थे, इसलिए लाला मुन्शीराम का आदेश पाकर वे गुरुकुल कांगड़ी में चले गए।

महात्मा मुन्शीराम ने गुरुकुल कांगड़ी के संचालन में आचार्य रामदेव को अपना प्रमुख सहायक बना लिया। अब तक यह गुरुकुल संस्कृत की एक सामान्य पाठशाला की भाँति चलाया जा रहा था। जब रामदेव जी को इस संस्था में मुख्याध्यापक का पद दिया गया, तो उन्होंने गुरुकुल की व्यवस्था, पठन–पाठन–प्रणाली तथा पाठ्यक्रम में अनेक सुधार किये। विभिन्न विषयों की पढ़ाई के लिए समय–विभाग–चक्र बनाया तथा कालांश–विभाजन किया। संस्कृत तथा वैदिक शास्त्रों के अध्ययन के साथ–साथ अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, गणित,

रसायन, अंग्रेजी आदि विषय भी शिक्षण-क्रम में सम्मिलित किये गए और इन विषयों के अधिकारी शिक्षकों को नियुक्त किया गया। इन परिवर्तनों से गुरुकुल ने एक विश्वविद्यालय का रूप ले लिया। जब महात्मा मुन्शीराम 1917 में संन्यास की दीक्षा लेकर स्वामी श्रद्धानन्द के रूप में देश के सार्वजनिक क्षितिज पर प्रकाशमान नक्षत्र की भाँति उभरे, तब आचार्य रामदेव पर गुरुकुल-संचालन का पूर्ण दायित्व आ गया। आचार्य जी ने इसे पूर्ण तत्परता से निभाया।

1924 में अतिवृष्टि तथा प्रचण्ड झंझावात के कारण गंगा-पार बने गुरुकुल के पुराने भवन नष्ट हो गए। तब आचार्य जी ने अपनी कर्मण्यता तथा साहस का परिचय देते हुए नवीन भवनों का निर्माण कराने के लिए लाखों रुपये एकत्र किये। 1930 में गुरुकुल नवीन भूमि पर आ गया। गुरुकुल कांगड़ी की सहयोगी संस्था 'कन्या गुरुकुल देहरादून' का अधिष्ठाता-पद भी आचार्य जी ने संभाला। कन्याओं के इस प्रसिद्ध प्राच्य शिक्षण-संस्थान का कुशलतापूर्वक संचालन किया। कन्या गुरुकुल से उनका आजीवन सम्बन्ध रहा।

आचार्य रामदेव की गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली को जो देन है, वह तो इतिहास का एक ज्वलन्त पृष्ठ बनी ही है, देश की स्वाधीनता के युद्ध में भी उनका अवदान कम नहीं है। जब 1932 में महात्मा गाँधी के में आज़ादी की लड़ाई का एक नया मोर्चा खुला, तब आचार्य रामदेव ने कांग्रेस के एक अनुशासित सिपाही के रूप में सत्याग्रह किया तथा कारावास का दण्ड भी झेला।

1934-35 में उन्हें आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रधान चुना गया। आचार्य रामदेव का अध्ययन विशाल था। वे उच्चकोटि के चिन्तक, विचारक तथा वक्ता थे। उनकी स्मरणशक्ति अद्भुत थी। जब वे व्याख्यान देने के लिए खड़े होते तो प्रमाण-रूप में विभिन्न ग्रन्थों के सैकड़ों उद्धरण साथ-ही-साथ देते चलते। इसके लिए वे पहले से ही अनेक पुस्तकों को चुनकर मंच पर अपने समीप रख लेते थे। आवश्यकता पड़ने

पर उन ग्रंथों के सम्बन्धित अंशों को पढ़कर भी सुना देते थे। उनके अपरिमित ज्ञान तथा प्रस्तुतीकरण की प्रभावपूर्ण शैली से श्रोता विस्मित और चकित हो जाते। लगातार कई घंटों तक व्याख्यान देते रहना आचार्यजी के लिए सामान्य बात थी। इतिहास, राजनीति, तुलनात्मक धर्म और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध उनके अध्ययन के प्रिय विषय थे।

व्याख्यान-कला में तो वे निपुण थे ही, लेखन में भी सिद्धहस्त थे। अंग्रेजी और हिन्दी, दोनों भाषाओं पर उन्हें असाधारण अधिकार प्राप्त था। उन्होंने गुरुकुल कांगड़ी से 'वैदिक मैगजीन' नामक अंग्रेजी मासिक का वर्षों तक सम्पादन किया। इसमें ख्यातिप्राप्त लेखकों के लेख प्रकाशित होते थे। रूस के प्रसिद्ध लेखक लियो तॉल्स्तॉय से आचार्य रामदेव का पत्र-व्यवहार हुआ था और इस पत्र-व्यवहार के द्वारा रामदेव जी ने तॉलस्तॉय को वेद की उदात्त शिक्षाओं से परिचित कराया था। 1916 में उन्होंने प्रसिद्ध योगी अरविन्द से स्वामी दयानन्द के व्यक्तित्व तथा उनके वेद-विषयक विचारों पर दो लेख लिखने का निवेदन किया। फलस्वरूप अरविन्द ने इन विषयों पर दो महत्त्वपूर्ण लेख लिखकर 'वैदिक मैगज़ीन" के लिए भेजे। स्वामी दयानन्द के ओजस्वी और महनीय व्यक्तित्व के विवेचन, तथा उनके वेद-विषयक विचारों की मार्मिक व्याख्या की दृष्टि से, ये निबंध अत्यन्त महत्वपूर्ण तथा ऐतिहासिक माने गए हैं।

उनके लिखे ग्रन्थों में 'भारतवर्ष का इतिहास', 'पुराण-मत पर्यालोचन' आदि उल्लेखनीय हैं। आर्यसमाज को राजनीतिक षड्यंत्रकारी संस्था ठहरानेवाले लोगों के आक्षेपों का उत्तर देते हुए आपने लाला मुन्शीराम के सहयोग से Arya Samaj and Its Detractors : A Vindication' नामक श्रेष्ठ पुस्तक लिखी।

1 दिसम्बर 1939 को आर्य समाज के इस महान् सेवक का निधन हो गया।

315, शंकर कालोनी, श्रीगंगानगर

जनसंख्या : उतार-चढ़ाव के खतरे
(विश्व जनसंख्यदिवस पर विशेष)

-दीनानाथ मिश्र

विभिन्न पंथों की जनसंख्या में घटत-बढ़त होती रहती है। हर दस साल बाद जनगणना होती है। दशक-दर-दशक विभिन्न पंथों की जनसंख्या के आँकड़ों की घटोतरी और बढ़ोतरी की प्रवृत्तियों का अध्ययन प्रकाशित करना आज सेक्यूलर प्रतिमानों के हिसाब से ईश-निन्दापरक बात मानी जाती है। इसी लिए आमतौर पर भारतीय समाचार पत्रों के पन्नों पर इस प्रकार का विश्लेषण कहीं नजर नहीं आता। ऐसे लेखन और अध्ययन को कट्टरपंथी सेक्युलरवादी साम्प्रदायिक मानते हैं। भारत में विभिन्न मज़हबों की जनसंख्या की घटोतरी-बढ़ोतरी पर कोई विशद और गम्भीर अध्ययन नहीं हुआ है। पश्चिम में ऐसे अध्ययन होते रहते हैं और खुलकर होते हैं। सैम्युअल पी. हंटिगटन की एक पुस्तक "द क्लैश ऑफ सिविलाइजेशन्स एंड द मेकिंग ऑफ द वर्ल्ड आर्डर" पर तो विश्वव्यापी चर्चा हुई है। हंटिगटन ने अपनी इस पुस्तक में सभ्यताओं के संघर्ष की भविष्यवाणी की है। इसमें इस्लामी मतावलंबियों की बढ़ती जनसंख्या पर गहरी चिंता भी व्यक्त की गई है। उन्होंने लिखा है- "मुसलमानों की जनसंख्या में विस्फोट हो रहा है और इसका परिणाम मुस्लिम देशों और उनके पड़ोसी देशों में अस्थिरता पैदा करने में निकल रहा है।.... अभी विश्व की जनसंख्या का बीस प्रतिशत मुसलमान हैं। कुछ वर्षों बाद वे ईसाइयों की जनसंख्या के आगे निकल जाएँगे और 2025 तक आते-आते विश्व की मुस्लिम आबादी 30 प्रतिशत हो जाएगी।"

यह कितना विचित्र है कि जिस देश का विभाजन अभी आधी शताब्दी पहले महजबी आबादी के आधार पर हुआ उस देश में दशक-दर-दशक आबादी की घटोतरी और बढ़ोतरी

की प्रवृत्तियों का भविष्योन्मुखी अध्ययन गहराई से नहीं होता, लेकिन अभी पिछले दिनों इस तरह का पहला विशद अध्ययन चैन्रै स्थित "सैन्टर फॉर पोलिसी स्टडीज" के तत्वावधान में तीन मान्य विद्वानों ने किया है। इनके नाम है ए. पी. जोशी, एम. डी. श्रीनिवास व जे. के. बजाज। कई वर्षों के गहन अध्ययन और विश्व भर के आँकड़ों के संकलन के बाद इस बृहद् पुस्तक में अधिकृत आँकड़ों का खजाना प्रस्तुत किया है। इस ग्रंथ के विमोचन के अवसर पर उप प्रधानमंत्री लाल कृष्ण अडवाणी और कांग्रेस के वरिष्ठ नेता वसंत साठे ने इसे अपनी तरह का पहला अध्ययन ग्रंथ माना। विभिन्न मजहबों की जनसंख्या के दशक-दर-दशक घटते-बढ़ते आँकड़ों का न केवल दूरगामी परिणाम होता है, बल्कि कई बार तो अल्पावधि में भी इसके चिंताजनक लक्षण प्रकट होने लगते हैं। हंटिगटन ने जो विश्लेषण किया वह मुख्यतः इस्लामी और ईसाई समाज के सभ्यतागत संघर्ष के संदर्भ में किया। भारत धर्मान्तरण, बलात् धर्मान्तरण, बर्बर हमलों का शिकार होता रहा है।

विश्व प्रसिद्ध इतिहासकार और विचारक विल डूराँ का आकलन है कि जितना रक्तपात भारत ने देखा है, उतना संसार के इतिहास में कभी नहीं हुआ। यह इतिहास की बात है। विभाजन के पहले मोपलों के दंगों से लेकर डायरेक्ट एक्शन तक भारत ने अक्षरशः शताधिक बड़े दंगे देखे। इन दंगों से ही यह निष्कर्ष निकाला गया कि विभाजन अपरिहार्य है। विभाजन के दौरान भारतीय नेताओं ने पटेल और पाकिस्तान के जनक मोहम्मद अली जिन्ना का जनसंख्या की अदला-बदली का प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया। विभाजन के दौरान हुए खून-खराबे में दोनों देशों के करीब 20 लाख लोगों को जान गँवानी पड़ी। विभाजन के समय भारत में मुसलमानों की जनसंख्या करीब 5 प्रतिशत थी। आज यह बढ़कर करीब

13 प्रतिशत हो गई है। "रिलीजियस डेमोग्राफी इंडिया" नामक पुस्तक के अध्ययन के हिसाब से मौजूदा गति से सन् 2061 तक भारत में हिन्दुओं और मुसलमानों की जनसंख्या बराबर हो जाएगी। यह अध्ययन बताता है कि भारत में जहाँ भारतीय पंथों की जनसंख्या का वर्चस्व है उन क्षेत्रों में भी दूसरे मजहबों की जनसंख्या खासी बढ़ी है।

इस अध्ययन के अनुसार "दिल्ली की जनसंख्या में मुस्लिम आबादी में असामान्य वृद्धि हुई है। ऐसा ही हिमाचल प्रदेश के चम्बा में, पंजाब के संगरूर में, हरियाणा के गुड़गाँव में, राजस्थान के अलवर में, महाराष्ट्र के अकोला, औरंगाबाद, नासिक और ठाणे जिलों में, आंध्र में हैदराबाद और निजामाबाद जिलों में, कर्नाटक के उत्तर कन्नड, दक्षिण कन्नड और कोडागू जिलों में असामान्य वृद्धि हुई है। जहाँ तक ईसाई आबादी बढ़ने का सवाल है, गुजरात के डांग जिले में, उड़िसा के फुलबनी और सुन्दरगढ़ जिले में ईसाई आबादी में असामान्य वृद्धि हुई है।" इसी तरह "भारतीय संघ के आबादी की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण प्रांतों उत्तरप्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल और असम के उपजाऊ क्षेत्र में 1991 की जनगणना के हिसाब से देश की 37 प्रतिशत आबादी रहती है। यह क्षेत्र भौगालिक दृष्टि से देश का 19 प्रतिशत क्षेत्र है और इस क्षेत्र में मुस्लिम आबादी बढ़ने की रफ्तार खतरनाक है।"

अध्ययन के अनुसार "इस क्षेत्र के अलग-अलग राज्यों को देखा जाए तो पता चलता है कि भारतीय पंथों की जनसंख्या बड़ी तेजी से गिरी है और मुस्लिम जनसंख्या जैसे-जैसे उत्तरप्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल व असम की तरफ जाते हैं, बढ़ते हुए प्रतिशत में नजर आती है। इस सम्पूर्ण क्षेत्र में मुसलमानों की जनसंख्या खासी रही है। खासकर उत्तरी सीमांत की पट्टी पर कई जिलों में उनकी बहुत बढ़ोतरी हुई है। पूर्वी उत्तरप्रदेश के बहराइच जिले से शुरु होकर गोंडा, बस्ती,

गोरखपुर, देवरिया आदि जिलों और बिहार के इसी पट्टी से लगे चंपारण, मुजफ्फरपुर, दरभंगा, सहरसा, पूर्णिया और संथाल परगना के जिलों की भी यही हालत है। पश्चिम बंगाल में पश्चिम दीनाजपुर, मालदा, बीरभूम और मुर्शिदाबाद जिलों की भी यही स्थिति है। असम के गोलपाड़ा, कामरूप, धरांग और नौगाँव जिले में भी मुसलमानों की आबादी 28 प्रतिशत है। विभाजन के बाद चार दशकों में यह 7 प्रतिशत बढ़ गई है। कई छोटे जिलों में मुस्लिम आबादी का प्रतिशत ऊपर दिए गए आँकड़ों से कहीं अधिक है।

मुसलमानों और ईसाइयों दोनों में मज़हबी तौर पर यही मान्यता है कि केवल उनके अनुयायी स्वर्ग के अधिकारी हैं, दूसरे नरक जाएँगे। इसीलिए ये दोनों ही मज़हब धर्मान्तरण में विश्वास करते हैं। धर्मान्तरण का सिलसिला कमोबेश अब तक चल रहा है। दूसरी तरफ भारत की सनातन सभ्यता में धर्मान्तरण की न तो परम्परा है और न उसका कोई दार्शनिक अधिष्ठान है। भारत की सनातन मूल्य परम्परा में ऐसा कुछ नहीं है कि हिन्दू केवल स्वयं को स्वर्ग का अधिकारी मानता हो। भारतीय राज्य परम्परा मजहब के आधार पर नागरिकों में किसी तरह का भेदभाव नहीं करती। 1947 के बाद भी मजहब के आधार पर नागरिकों में भेदभाव न करने का संवैधानिक प्रावधान किया गया, पर प्रायः सम्पूर्ण इस्लामिक दुनिया में ऐसा भेदभाव डंके की चोट पर किया जाता है। 11 सितंबर 2001 की घटना के बाद अब अमेरिका और कुछ अन्य पश्चिमी देशों में मुसलमानों को भेदभाव का कुछ सामना करना पड़ रहा है। जब अमेरिका ने अफगानिस्तान पर हमला किया तब कुछ विचारकों ने इसे सभ्यताओं का संघर्ष कहना आरंभ किया, लेकिन हाल में जब इराक पर अमेरिका और ब्रिटेन ने हमला कर उसे पराजित किया और उसके बाद जब ईरान, सीरिया वगैरह पर हमलों के खतरे मँडराने लगे तब से

इस्लाम और ईसाई सभ्यता के बीच संघर्ष की बात को कुछ विश्वसनीयता भी मिली।

भारत की सनातन परम्परा में भले ही सर्वधर्म समभाव रहा हो, लेकिन इसके बावजूद बढती हुई आबादी का दुष्परिणाम इतिहास में हमें भुगतना पड़ा है। गैर-भारतीय मूल के मजहबों की जनसंख्या बढ़ने की खतरनाक स्थिति हमें झेलनी पड़ी है। भारत में बिहार के अनेक जिलों में जहाँ करीब-करीब मुस्लिम बहुमत हो गया वहाँ हिन्दू आबादी अपने मृतकों का दाह संस्कार नहीं कर सकती। उन्हें दाह संस्कार करने के लिए 40-50 किलोमीटर दूर जाना पड़ता है, जहाँ मुस्लिम बहुमत नहीं हुआ है। ऐसे भी इलाके है जहाँ विवाह के अवसर पर बाजा बजाने के लिए इमाम से अनुमति लेनी पड़ती है। "रिलीजियस डेमोग्राफी ऑफ इण्डिया" इस मायने में पहला ऐसा जनसांख्यिकीय अध्ययन है जो इस समस्या को न तो अतिरंजित करता है और न ही अल्पकथन से निपटा देता है। 25, 40 या 60 साल बाद भारत की मजहबी जनसंख्या का क्या अनुपात होगा और उससे कौन-कौन से सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और पृथकतावादी तत्व उभरेंगे और अंततः देश को क्या भुगतना पड़ सकता है, इसका आकलन भी इस अध्ययन के आधार पर किया जा सकता है। हाल ही में 2011 की धार्मिक जनसंख्या के आँकड़े और भी दिल दहलाने वाले हैं। उपर्युक्त इलाकों में मुसलमानों की आबादी और भी तेजी से बढ़ी है वही पूर्वांचल में ईसाइयों की जनसंख्या इतनी तेजी से बढ़ी है कि हिन्दू अल्पसंख्यक हो गए हैं।

दैनिक जागरण

आतंक का जन्मदाता इस्लाम

-स्वामी वेदमुनि परिव्राजक

कोई कितना भी प्रयत्न कर ले, परन्तु जब तक संसार में इस्लाम और उसका प्रसारक-प्रचारक ग्रन्थ कुरान है, तब तक संसार में आतंकवाद को समाप्त नहीं किया जा सकता। शेख सादी के शब्दों में "चोर को नहीं उसके माँ-बाप को मार दो'। जब तक मूल रहेगा, तब तक उसके काँटों को नहीं मिटाया जा सकता। आवश्यकता है कि आतंकवाद के मूल इस्लाम और उसके प्रसारक-प्रचारक ग्रन्थ कुरान को मानवता के हित में प्रतिबन्धित किया जाए।

हमारा मत यह नहीं है कि मुसलमानों को समाप्त कर दिया जाए, उन्हें मार डाला जाए और कुरान को जला दिया जाए, अपितु हमारा विचार है कि इस्लाम और उसके विधायक ग्रन्थ कुरान के विरुद्ध संसार का जनमत जागे तथा इस्लाम और कुरान की वास्तविकता का, उस घोर घृणास्पद हत्यारी रक्तपिपासी विचारधारा का खुलकर विरोध करें। स्पष्ट शब्दों में इसे विश्व मानव समाज के सामने रखा जाए, और इसका कठोर खण्डन किया जाए। सत्य को छिपाना, उसकी ओर से मुँह फेरना, उसकी उपेक्षा करना, उस पर पर्दा डाले रखना भी तो महापाप है। जब आप सत्य को जानते हैं तो उसे उजागर करने में हिचकते क्यों हैं?

सभी जानते हैं कि दो और दो चार होते हैं किन्तु यदि आप उसे व्यक्त करने को तैयार नहीं तो क्या इसका यह अर्थ नहीं कि स्पष्टरूपेण न सही, परोक्षरूपेण अत्याचार, अन्याय और हत्याओं का समर्थन कर रहे हैं। क्या यह पाप नहीं है? पाप का अर्थ बुराई ही तो है और आप एक इतनी भीषण, जघन्य बुराई को देखते हुए उसकी अनदेखी कर रहे हैं तो यह तो स्पष्ट ही बुराई का, पाप का समर्थन हो रहा है। आप जानकर उसका भले ही समर्थन नहीं कर रहे, किन्तु आपका मौन तो उसका स्पष्ट समर्थन ही है। इस्लाम की इस बुराई को रोकने, पाप को मिटाने का एक ही प्रकार है कि इसके विरुद्ध विश्व जनमत तैयार हो।

यह कार्य करने के लिये संसार के समस्त प्रचार साधनों का, मीडिया का भरपूर सहयोग लिया जाए, चाहे वह सरकारी मीडिया हो या गैर-सरकारी। यदि इस कार्य के मार्ग में कोई खुमैनी बनकर सलमान या नसरीन की हत्या का आदेश करे तो क्यों नहीं मानवता के हित के लिये कुछ युवक बम बनकर उस इन्सानियत के शत्रु को संसार से विदा कर दें? एक मानवता का शत्रु किसी सत्यवादी, ईमानदार व्यक्ति को संसार से मिटा देने के लिए करोड़ों के पुरस्कार की घोषणा कर देता है तो क्या समस्त संसार में ऐसे युवकों का अकाल पड़ गया है, जो ऐसे मानवता-विरोधी पृथिवी के अभिशाप को मिटाकर मानवता को चैन की साँस लेने का अवसर देने और विश्व में शांति की स्थापना के लिये बलिदान होने को तैयार हो? जब तैयार होंगे ऐसे युवक तभी इस समस्या का हल होगा। जब तक इस प्रकार के अमर बलिदानी तैयार नही होंगे, तब तक मानवता का हित होना संभव नहीं होगा। संस्कृत लोकोक्ति है "शठे शाठ्यं समाचरेत्" अर्थात् दुष्ट के प्रति दुष्टता का व्यवहार होना चाहिये।

सरकारों का तो दायित्व है, प्रथम कर्तव्य है कि वे अपने-अपने क्षेत्र में, अपने-अपने देश में कटिबद्ध हो जाएँ, अत्याचार, अन्याय और आतंकवाद को मिटाने के लिए अत्याचार, अन्याय और आतंकवाद चाहे राजनीतिक हो या धार्मिक उसका उन्मूलन तो होना ही चाहिये। न केवल अपने अपने देश में ही सरकारें कटिबद्ध हों अपितु पूर्णशक्ति के साथ इस मानवता की शत्रु विचारधारा की समाप्ति के लिये सब मिलकर संयुक्त रूप से इस कार्य के सम्पादनार्थ विश्व जनमत जगायें तथा संयुक्त राष्ट्र संघ और सुरक्षा परिषद् पर दबाव डालें कि वे विश्व में इस अभिशाप की समाप्ति के लिये पूर्णतया कटिबद्ध हो जायें और जब तक यह आतंकवादी अभिशाप समाप्त न हो जाय, निरन्तर और उत्तरोत्तर अपने प्रयत्नों को तीव्र से तीव्रतम करें- "नष्टे मूले नैव पत्रं न पुष्पम्"। जब मूल ही न होगा तो काँटों की तो बात ही क्या? पत्ते और फूल भी नहीं होंगे। न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी।

वैदिक संस्थान नजीबाबाद, उत्तरप्रदेश

हल्दी घाटी में महाराणा प्रताप की अकबर के विरुद्ध सामरिक व कूटनीतिक विजय

-हरिकृष्ण निगम

क्या आज हमें सहसा विश्वास हो सकता है कि देशभक्ति के गीतों में सदियों से ढले, स्वधर्म व स्वेदश प्रेम की रक्षा के दीप-स्तम्भ महाराणा प्रताप जिनका जन्म 31 मई सन् 1540 में हुआ था उन्होंने जब 29 जनवरी 1597 में अनेक संघर्षों के साथ जूझते हुए प्राण त्यागे थे। तब वे मात्र 57 वर्ष की आयु के थे। किस प्रकार शौर्य पूर्ण कार्यों की अनवरत श्रंखला द्वारा वे भावी पीढ़ी के लिए वे एक राष्ट्रीय धरोहर बन गए थे उसमें विस्मित करने वाले दर्जनों प्रकरण आज भी हमारे सामने हैं।

साथ ही इस देश के इतिहास की इससे बड़ी त्रासदी क्या हो सकती है कि अपने समय में जिन महाराणा प्रताप के रणकौशल व बलिदान के हर क्षण को स्वयं तत्कालीन हिन्दू-मुस्लिम कवियों, पर्यटकों इतिहासकारों व दरबारी लेखकों के साथ-साथ राजवंशी राजपूतों के प्रत्यक्षदर्शी वृत्तान्तों में लिपिबद्ध व अभिलेखित किया था उन्हें ही हमारे इस इतिहास के अध्याय का विद्रूपीकरण करने वाले सहधर्मियों ने दुष्प्रचार द्वारा कलुषित करने का प्रयास किया है। उनका यथोचित मूल्यांकन करने का मनोबल आज भी विकृत इतिहास ग्रंथों के अध्येताओं में नहीं पैदा हुआ है जो एक राष्ट्रीय लज्जा का विषय है। वस्तुतः महाराणा प्रताप का नाम कोई रक्षा सम्बोधन या व्यक्तिवाचक संज्ञा मात्र नहीं है। वे तो देश काल परिभाषा का एक साकार रूप है। ऐसे बलिदानी सदियों में पैदा होते हैं।

पर दुराग्रही इतिहास-लेखन आज भी उस दीर्घकालीन हिन्दू वैरनीति का ऐसा प्रमाण है जिसे सिर्फ अक्षम्य मूल मात्र कहकर अनदेखा नहीं किया जा सकता है, उसको साक्ष्यों

द्वारा स्थापित करना समय की एक बड़ी माँग है। राणा प्रताप का उद्‌भव, उसकी रणनीति संघर्षों के बीच संगठन-क्षमता और आत्मसम्मान की अपनी परिभाषा को चुनौती देना आज की प्रचलित इतिहास पुस्तकों में जिस तरह विवादित बनाया गए है उसको स्वातंत्र्योत्तर भारत में देश का दुर्भाग्य ही कहा जा सकता है।

हल्दीघाटी का युद्ध इतिहास में इसलिए एक मुहावरा बन गया था क्योंकि अजेय दिखने वाले अकबर को इस युद्ध में एक चुनौती देकर सम्पूर्ण जनता में उन्होंने शौर्य जगाया और तत्पश्चात् व्यवहार के धरातल पर गुरिल्ला पद्धति अपनाकर उन्होंने विजय प्राप्त कर अपने जीवन काल में मंडलगढ़ व चित्तौड़ छोड़कर समस्त मेवाड़ पर विजय प्राप्त की थी। जो मुगलों के अधिकार में जा चुके थे। इसी कूटनीति के चलते अकबर की राजपूतों से सम्बन्धित नीति पूर्णतः असफल रही थी एवं प्रताप मुगल सम्बन्धी नीति को विदेशी दासता के विरुद्ध युद्ध का स्वरूप देने में पूर्णतः सफल हुए थे। इसी नीति के कारण उन्हें हकीम खान सूर एवं जालौर के ताज खान का पूर्ण सहयोग मिला था। हकीम खान सूर ने तो हल्दीघाटी के युद्ध में सेना की आधी कमान संभाली थी धीरे-धीरे मुगल अत्याचारों की विरोधी सभी ताकतें प्रताप की सहयोगी बनीं जिसमें सिरोही ईडर, जोधपुर एवं डूंगरपुर जैसी शक्तियाँ भी थीं।

श्याम नारायण पाण्डेय के काव्यग्रंथ में राणा प्रताप के 1576 ई. को हुए हल्दीघाटी के युद्ध में मुट्ठी भर राजपूतों ने जिस तरह विशाल मुगल सेना के छक्के छुड़ा दिए और राणा व उसके सैनिकों ने अपनी सुरक्षा की परवाह न करते हुए आगे बढ़कर मानसिंह पर सीधा आक्रमण किया था जो अनूठा था। मानसिंह छुपकर बच गया था। पर प्रताप को शत्रु के सैनिकों ने घेर लिया। इस स्थिति में झाला माचा ने प्रताप के राज-चिह्न त्वरितगति से अपने सिर पर धारण कर

शत्रु सेना को धोखे में डाल दिया एवं स्वयं को बलिदान कर दिया। प्रताप बच कर अरावली पहाड़ियों में चले गए। राणा के मारे जाने के भ्रम में युद्ध दोपहर तक ही स्थगित हो गया एवं बचे हुए राणा के सैनिक भी मारकाट करते हुए पर्वतों में चले गए। युद्ध बिना किसी निर्णय के समाप्त हो गया था और दोनों ही पक्षों ने अपनी विजय का दावा किया। अधिकांश इतिहासकारों ने राणा को पराजित माना, पर राजस्थान के मन्दिरों में आज भी कई जगह ऐसे शिला लेख मिलते हैं कि भीलों के कारण महाराणा ही विजयी हुए थे। तत्कालिक या अल्पकालिक परिणाम जो भी हुए हों, इतना तो निश्चित है कि हिन्दू मानस पटल पर इस युद्ध के दूरगामी परिणाम मेवाड़ के पक्ष में ही थे। प्रताप ने मुगलों द्वारा विजित भू-भाग पर आधिपत्य करने का सश्रम अभियान निरन्तर जारी रखा, हल्दीघाटी युद्ध के परिणामों से खीझकर अकबर ने मानसिंह की प्रताड़ना की एवं स्वयं अक्टूबर 1576 में मेवाड़ अभियान पर निकल पड़ा। उसने उदयपुर, बाँसवाड़ा, डंगरपुर, ईडर आदि पर अधिकार कर लिया एवं उदयपुर का नाम बदल कर मुहम्मदाबाद रख दिया था। अकबर स्वयं तो मेवाड़ से मालवा एवं फिर अजमेर कूच कर गया पर अपनी सेना प्रताप के विरुद्ध लगाए रखी क्योंकि वह मेवाड़ को अपनी अधीनता में लाने को किसी प्रकार भी भुला नहीं पा रहा था। 15 अक्टूबर 1577 ई. को उसने मेवाड़ पर आक्रमण हेतु बड़ी सेना देकर शाहबाज को भेजा जिसने राजधानी कुम्भ को जीत लिया एवं अनेक मन्दिरों को ध्वस्त किया। इधर प्रताप के पास प्रचुर अथभिाव था एवं दुखी होकर उसने मेवाड़ त्यागने का मन बना लिया था पर सौभाग्य से इसी समय भामाशाह ने एक बड़ी धनराशि उन्हें भेंट में दी और स्वतंत्रता के युद्ध को जारी रखने की प्रार्थना की। प्रताप ने फिर अपनी सेना संगठित की एवं नवम्बर 1578 इ. में दिवेर गाँव के बड़े मुगल थाने

पर आक्रमण किया। इसमें भामाशाह एवं राणा प्रताप का ज्येष्ठ पुत्र अमर सिंह भी साथ था। अकबर का चाचा सुल्तान खान यहाँ नियुक्त था। इस बार भी मेवाड़ व मुगल सैनिकों के बीच घमासान एवं निर्णायक युद्ध हुआ एवं सुल्तान खान अमर सिंह के हाथों एक ही भाले के वार से घोड़े सहित मारा गया एवं मुगल सेना भाग खड़ी हुई।

प्रताप की दिवेर विजय से क्रुद्ध होकर अकबर ने 15 दिसम्बर 1578 ई. में शाहबाज खान को दूसरी बार मेवाड़ भेजा पर जब वह असफल रहा तब पुनः नवम्बर 1579 ई. में उसे बड़ी सेना देकर भेजा किन्तु थक हार कर शाहबाज खान फिर 1580 ई. में लौट गया। इस पर भी अकबर को चैन न मिला तब उसने इसी वर्ष के अन्त में अब्दुलरहीम खानखाना को मेवाड़ अभियान में लगाया पर अमर सिंह ने उसके सभी बच्चों को बन्दी बना लिया जिसे प्रताप ने सम्मान सहित खानखाना के पास लौटा दिया। शर्मिन्दा होकर खानखासा ने 1581 ई. से 1584 ई. के नवम्बर तक अभियान रोक दिया। 5 दिसम्बर 1584 ई. को एक बार फिर जगन्नाथ कछवाहा के नेतृत्व में प्रताप की राजधानी चाबंड पर असफल आक्रमण कर वह भी निराश होकर लौट गया। सैनिक संकट प्रायः समाप्त हो गया और अल्पकाल में ही 1586 ई. के अन्त तक मोडलगढ़ एवं चित्तौड़ को छोड़कर सारे मेवाड़ का पुननिर्माण प्रारंभ हुआ और लोगों को स्वराज्य की अनुभूति हुई। यह प्रगति अगले 11 वर्ष तक जब तक 11 जनवरी 1597 को राणा प्रताप की असामयिक मृत्यु हुई अबाध चलती रही।

महाराणा प्रताप का जीवन चरित्र जिस तरह कविवर श्याम नारायण पाण्डेय की कृति 'हल्दीघाटी' में लिपिबद्ध है व सामाजिक महत्त्व का है क्योंकि विपरीत परिस्थितियों में उन्होंने जिस चतुराई, कौशल और दृढता के साथ शासनव्यवस्था करते हुए मेवाड़ के गौरव को अक्षुण्ण बनाए रखा और

अपनी देशभक्ति को प्रजाजनों को भी दीक्षित किया वह अविश्वसनीय था। इतिहास का वह पृष्ठ अकबर की नृशंसता एवं कुटिलता का गवाह है, पर राणा प्रताप ने उसके सामने कभी सिर नहीं झुकाया था।

ए/1002, पंचशील हाईट्स,
महावीर नगर कान्दिवली (प.)
मुम्बई 40067

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद स्वदेशी के प्रतीक

-कृष्ण मोहन गोयल

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद अपनी वकालत की शिक्षा पूर्ण करने के उपरान्त पूज्य बापू के आदर्शों से प्रभावित होकर स्वाधीनता संग्राम में सक्रिय भूमिका हेतु वर्धा आश्रम में आकर रहने लगे।

वह गाँधी जी के पास शिष्यों में प्रमुख थे। एक दिवस गौ-रक्षा सम्मेलन के कार्यकर्ता पूज्य बापू के पास सम्मेलन की अध्यक्षता का निमन्त्रण लेकर आए। गाँधी जी उस दिन अन्यत्र व्यस्त थे इसलिए गाँधी जी ने गऊ रक्षा सम्मेलन की अध्यक्षता के लिए राजेन्द्र बाबू का नाम तय किया।

राजेन्द्र बाबू ने गौ-रक्षा सम्मेलन के कार्यकर्ताओं से तीन दिन बाद सम्पर्क करने को कहा। गाँधी जी ने राजेन्द्र बाबू से इस कारण को स्पष्ट करने को कहा। तो राजेन्द्र बाबू बोले कि गौ-रक्षा का व्रत लेने से पूर्व में कर्म और मन से उस व्रत हेतु दृढ़ संकल्प हो जाऊँगा।

तीन दिन बाद जब गौ-रक्षा सम्मेलन के कार्यकर्ताओं राजेन्द्र बाबू के पास आए तो वह उनको देखकर भौचक्के रह गए। राजेन्द्र बाबू का परिधान पूर्णतया स्वेदशी था और उन्होंने चमड़े के जूतों के स्थान पर कपड़े के जूते पहन रखे थे। उनके परिधान में अब चमड़े की कोई भी वस्तु नहीं थी।

राजेन्द्र बाबू जब राष्ट्रपति भवन में रहने गए तो वहाँ भी उन्होंने अपने निवास में स्वेदशी वस्तुओं को अपनाया। गाय की सेवा उनका दैनिक कार्यक्रम था तथा गाय के दूध से बने आहार ही वह अपने भोजन में ग्रहण करते थे। राष्ट्रपति पद पर रहते हुए उन्होंनें गाँधी चरखा का प्रयोग अवश्य किया। साथ ही साथ जीवन पर्यंत यथासंभव हाथ से कते सूत से निर्मित परिधान को ही धारण किया। विदेशी यात्रा के दौरान भी वह स्वदेशी को प्राथमिकता प्रदान करते थे। विदेशी मेहमान भी इस स्वदेशी पसन्द की भूरि-भूरि प्रशंसा करते थे। राजेन्द्र बाबू सदैव भारतीय भाषा हिन्दी में वार्तालाप करना पसंद करते थे शत-शत नमन।

Soldier Saint Guru Govind Singh

-Pranav Khullar

Saint, scholar, soldier all rolled into one, Guru Gobind Sing was responsible for the evolution of the Khalsa Panth. He was barely nine years old when the dismembered head of his father Guru Teg Bahadur was brought to him at Anandpur Sahib. This became the turning point in little Gobind Rai's life and paved the way for the concretisation of the Sikh tradition. The child held back his tears, embraced the faithful Jaita who had risked his life to bring the sacred trust intact, and declared that hencedforth all untouchables would be the Guru's own children. Thus began the **Dhama Yudh** Guru Gobind Singh launched against tryranny and injustice.

Game Changer

Swami Vivekananda said, "The Guru lived and died for dharma to preserve the values of his motherland and protect the honour of his countrymen." It is said that when Swamiji narrated the tales of valour and nobility of Guru Gobind Singh to his disciples, tears would well up in his eyes while listeners were fired by the Guru's heroic deeds. In the Zafarnama, th Guru addressed Aurangzeb thus. "A religious man never breaks his promise. You are faithless and unreligious. You know neither God nor Prophet Muhammed.. What if my four sons have been killed? It is no heroism to extinguish a few sparks".

Rabindranath Tagore called Guru Gobind Singh a 'great harbinger of change' - his greatest achievement being the

creation of the Khalsa, a new social order where everyone is equal. This new order played the role of defending the people, members fought like lions in war and acted as model citizens in peace. Renowned historian H. R. Gupta captures the etymological and philosophical-spiritual significance of each of the five letters of the Persian word, Khalsa —'Kh' and 'a' stand, respectevely for Khud or oneself and the Akal Purkh-God. The third letter 'l', signifies Labbaik, meaning the following question of God: "What do you want with me? Here I am. What would you have?" And the reply of the Singh devotee: "Lord give us liberty and sovereignty." The fourth letter 's' signifies Saheb, Lord, The last letter is 'a'. The former signifies azadi or freedom and the latter refers to Huma, the legendary bird."

The philosophy of the Khalsa falls perfectly inline with Indic spiritual tradition that goes beyond toleration. It means respecting the faiths of others. 'The Sikh gurus who complied the Adi Granth", says S. Radhakrishnan, "had this noble quality of appreciation of whatever was valuable in other religious traditions". The Guru Granth Sahib itself is replete with verses and hymns from Sufi traditions of Baba Farid as well as the bhakti traditions of Namdev and Maharashtrian saints besides Kabir and Dhanna. Guru Gobind Singh symbolised the spiritual-moral upsurge of his times, combining in himself the erudition of a scholar, the sensitivity of a poet and passion of a warrior.

According to scholar Max Macauliffe in his Sikh Religion, Its Guru Sacred Writings and Authors, Guru Gobind Singh's

first sermon to his discliples is significant and clarifies all doubts about the Guru's concept of the Khalsa. "Let all embrace one creed and obliterate difference of religion. Let the four castes which have different rules for their guidance abandon them all, adopt one from the the adoration and become brothers. Let no one deem himself superior to another". According to historian Arnold Toynbee, Guru Gobind Singh anticipated Lenin by 200 years.

Karma Yogi

Guru Gobind Singh wrote prolifically in Punjabi, Hindi and Persian. He wrote Dasam Granth in Punjabi, Hikayats and Zafarnama in Persian and Ram Avtar, Krishan Avtar and Bachitra Natak in Braj Bhasha. All these works are marked by a high degree of excellence and sensibility. Giani Gian Singh, author of Tawarik-e-Guru-Khalsa captures the spirit of the Guru when he writes "Guru Gobind Singh could snatch valuable hours from his martial activities for writing historical litrature during his stay at Poanta Sahib. Tradition holds that the torrents of the river Yamuna adopted pin-drop silence when the Guru indulged in literary pursuits."

The Guru fought his dharma yudh in the great epical tradition of righteousness to restore the moral balance of the age: "When all other means fail, it is lawful to draw the sword" he declared. The great Karma Yogi that he was, his life character is summed up beautifully in his own oft-quoted verse from his Chandi Charitra : "Grant me, My Lord, the boon/Never to falter in doing a noble deed."

मनुष्य की पहचान

–रेनू सैनी

एक दिन पंडित ताराचरण शास्त्रार्थ करने के लिए स्वामी दयानन्द के पास पहुँचे। उस समय दयानंद जमीन पर एक आसन पर बैठकर कुछ लिख रहे थे। उन्होंने ताराचरण को अपने पास के एक आसन पर बैठने को कहा। ताराचरण विद्वान थे किन्तु उन्हें इस बात का बेहद अभिमान था। वह स्वामी दयानंद को अपने से निम्न मानते थे। स्वामी दयानन्द ने जब उन्हें जमीन पर रखे आसन पर बैठने का कहा, तो उन्होंने इसे अपना अपमान समझा। उन्हें लगा कि वह तो सर्वश्रेष्ठ हैं इसलिए उन्हें हर लिहाज से स्वामी दयानंद से ऊँचा आसन मिलना चाहिए। वह भला नीचे के आसन पर बैठकर अपना स्तर कम कैसे कर सकते हैं? वह खड़े रहे। स्वामी दयानंद पंडित ताराचरण के मनोभाव को समझ गए। उन्होंने कहा, 'पंडित जी, मात्र ऊँचे आसन पर बैठने से कोई महान नहीं होता। यदि ऐसा होता तो सामने ऊँचे वृक्ष पर बैठा कौवा सबसे अधिक पूज्य व महान होता। 'संयोगवश उस समय सामने के वृक्ष पर एक कौवा बैठा भी हुआ था। कौवे की ओर इशारा करके स्वामी दयानंद फिर बोले, 'महानता तो त्याग, परोपकार, विनम्रता जैसे गुणों से तय होती है। व्यक्ति गुणों से महान समझा जाता है उच्च स्थान पर बैठने से नहीं। यदि हमारे अंदर गुण हैं तो हम नीचे बैठने पर भी उतने ही विद्वान रहेंगे और यदि हमारे अंदर बुराइयाँ है तो हम उच्च स्थान पर बैठकर भी बुरे समझे जाएँगे।' स्वामी दयानंद की यह बात सुनकर पंडित ताराचरण लज्जित हो गए और उनके बगल वाले आसन पर बैठ गए।

Brahmasha India Vedic Research Foundation acknowledges with thanks receipt of Rs. 1100/- from Smt. Uma Monga, C-2B/92C, Janakpuri New Delhi-110058.
Donation to the Foundation are eligible for Tax Exemption under section 80G of the Incom Tax Act 1960 vide No. DIT(E)1/3313/DELBE 21670-2503210 dated 25.03.2010.

Date of Pubn. : 31.12.2015 Posted at - NIE - H.O. Postal Date : 2-3 Jan. 2016
RNI Reg. No. DELBIL/2007/22062 Postal Regd. No. DL(W) 10/2143/2014-2016

मृळा नो रुद्रोत नो मयस्कृधि क्षयद्वीराय नमसा विधेम।
यच्छं च योश्च मनुरायेजे पिता तदश्याम तव रुद्र प्रणीतिषु।।

(ऋक् 1/8/5/2)

ऋषि – कुत्स आंगिरसः, देवता–रुद्रः, छन्द – जगती

अर्थ–हे (रुद्र) दुष्ट शत्रुओं को रुलाने वाले प्रभो! हमें (मृळ) सुखी करो और (मयस्कृधि) हम पर अनन्त सुखों का वर्षा करो। शत्रुओं के वीरों का नाश करने वाले आप हमारी रक्षा करें। (यच्छम्) हे रुद्र! आप हमारे पिता और पालन करने वाले हैं, आप हमारी प्रजा को सुखी कर और प्रजा के रोगों का नाश कर हमारा पालन करें। हे रुद्र प्रभो! (तव प्रणीतिषु) आपकी उत्तम नीतियों में प्रवृत्त हुए हम लोग भी (अश्याम) वीरों के चक्रवर्ती राज्य को आपके अनुग्रह से प्राप्त करें।

Oh Almightly God, You are Terror-inspiring for the wicked. Do come to our succour and bestow Your facility upon us. Propiciating You with obeisance, we beseech You, Oh subjugater of the opponents and protect us in every way.
Oh chastiser of the wicked, leading lives according to Your Commandments, may we by Your grace enjoy the benefits of sovereign imperial sway establised by the brave on this earth.

Printed by - Friendsprintofast, New Delhi-58